लखनऊ, नई दिल्ली, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित
पायनियर

बीमारी से जागरूकता की ओर
आज के अंक के साथ
एजेण्डा

पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी के प्रयास की आवश्यकता: प्रो. ओंकार सिंह

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

धरती के ऊर्जा स्त्रोत, पर्यावरण तथा आपदा विज्ञान 'ग्लेशियर का पिघलना' विषयक दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की शुरुआत के मौके पर प्रबुद्ध वक्ताओं ने महत्वपूर्ण सुझाव व शोध-पत्र प्रस्तुत किए।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि बीएन भार्गव चेयरमैन इकोमैन इण्डस्ट्रीज ने स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइन्सेज, डा. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय तथा इन्स्टीयूशन ऑफ इंजीनियर्स, यूपी स्टेट चैप्टर के सहयोग से आयोजित इस संगोष्ठी की सामयिकता एवं महत्व की प्रशंसा की। समारोह में पर्यावरणविद् बीएन भार्गव ने विचार व्यक्त करते हुए अंधाधुंध एवं अनियोजित विकास के इस माडल को जोकि प्राकृतिक संसाधनों के असंवेदनशील दोहन की कीमत पर हो रहा है, को पूरी तरह खारिज किया। उन्होंने इस दिशा में प्रदेश सरकार के विभिन्न प्रयासों तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति राज्य सरकार की प्रतिबद्धता से अवगत कराया।

प्रो. ओंकार सिंह, पूर्व कुलपति मदन मोहन मालवीय प्राविधिक विश्वविद्यालय, द्वारा उपस्थित विद्वजनों को देश की उस गौरवशाली परम्परा की याद दिलाई गई जिसमें मानव एवं प्रकृति में अपूर्व सामंजस्य था। उन्होंने कहा कि हमारा भविष्य हमारे अतीत की नींव पर खड़ा है तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु हम सभी को छोटे - छोटे कदम उठाकर पहल करने की आवश्वयकता है। आवश्यकता न होने पर कमरे के बल्ब आदि बुझा देने तथा कार पूलिंग इत्यादि से वाहन जनित प्रदूषण को कम किया जा सकता है। अपने छोटे-छोटे प्रयासों से हम प्रदूषण रहित भविष्य की संरचना में सफ ल होंगे। पर्यावरण में लगातार आ रहे बदलावों के लिये हम सभी जिम्मेदार हैं अत: यह अति आवश्यक है कि हम सभी लोग अपने-अपने क्षेत्र में रहते हुए छोटे-छोटे प्रयासों से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सहयोग दें जिससे सम्भावित खतरे को टाला जा सके। इसरों के वरिष्ठ वैज्ञानिक सच्चिदानन्द साहू ने बताया कि इसरो तथा नासा हाथ से हाथ मिलाकर रिमोट सेन्सिंग सेटिलाइट की दिशा में काम कर रहे हैं। मानवजनित पर्यावरण की क्षति को रोका जा सकता है, क्योंकि अगर यही स्थिति बनी रही तो 21वीं सदी के अन्त तक वार्षिक वर्षा में 15 से 31 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी तथा तापमान में हर वर्ष 3 से 6 डिग्री सेन्टीग्रेड की बढ़ोत्तरी सम्भावित है। अभी लगभग 15 रिमोट सेन्सिंग सेटेलाइट विभिन्न पर्यावरण बदलावों को रिकार्ड कर रहे हैं। ऐसी दशा में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की संस्थाओं को एकजुट होकर काम करने की आवश्यकता है। इं. वीबी सिंह पूर्व अध्यक्ष इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स ने संगोष्ठी में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 'पर्यावरण और अध्यात्म एक दूसरे से जुड़े हैं तथा हमें सृष्टि के साथ सामान्जस्य बनाकर रहना होगा, सृष्टि को प्रभावित भी मनुष्य ही करता है। पेड़ो कों अंधाधुंध काटने के रोकने की जरूरत है। प्रकृति से हम ज्यादा ले रहे है तथा दे कम रहे है, प्रकृति हमें वही वापस करेगी जो हम उससे लेंगे। संगोष्ठी में देश-विदेश के विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों से आए हुए वैज्ञानिकों तथा शोध छात्रों ने अपनी प्रस्तुतियों में पर्यावरण संरक्षण की विभिन्न चुनौतियों एवं समाधानों को रेखांकित किया।संस्था के महानिदेशक (तकनीकी) प्रो. भरतराज सिंह ने कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते कहा 'जब हम पर्यावरण में बदलाव की बात करते हैं तब उसका उद्देश्य धरती पर बढ़ रहे तापमान व मौसम में बदलाव से होता है। दिनों-दिन हमारी धरती का तापमान बढ़ रहा है और इसका मुख्य कारण धरती के वायुमण्डल में कार्बन-डाई-आक्साइड का घनत्व तथा तापमान का बढ़ना है। हमारा अनियंत्रित ऊर्जा उपयोग वायुमण्डलीय ताप वृद्धि का एक मुख्य कारक है एवं सड़कों पर बढ़ते हुये वाहन, एयर कंडीशनर, कम्प्यूटर तथा अन्य विद्युत संयत्रों के बढ़ते हुये उपयोग से धरती के वायुमण्डलीय तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। हम विकास का मूल्य चुका रहे है, जो हमें प्रदूषित हवा, जल तथा कीटनाशकयुक्त फलों व सब्जियों के रूप में दिखाई दे रहा है। एसएमएस के सचिव एवं मुख्यकार्यकारी अधिकारी शरद सिंह ने विभिन्न देशों से आए हुए विद्वजनों से धरती के पर्यावरण की सुरक्षा में अपना योगदान सुनिश्चित करने का अनुरोध किया।

एक शाम कवि आशाराम जागरथ के साथ आज

लखनऊ। हिन्दी-अवधी के जाने-माने कवि आशाराम जागरथ के साथ कविता की एक शाम का आयोजन 10 दिसंबर को शिरोज हैंगआउट गोमती नगर में किया जायेगा। इस अवसर पर आशाराम जागरथ अपनी कविताएं सुनायेंगे और साहित्यकार उनकी कविताओं पर अपने विचारों को साझा करेंगे। यह जानकारी जन संस्कृति मंच के प्रदेश अध्यक्ष कौशल किशोर ने दी।